

हरिकथामृतसार
नैवेद्य समपण संधि

हरिकथामृतसार गुरुगळ करुणधिम्धापनिथु पेळुवे
परम भगवधभक्थरिधनाधरधि केळुवुधु

लेक्किसदे लकुमियनु बोम्मन
पोक्कुळिंदलि पडेद पोस पों
बक्किदेरनु पडेदवयवगळिंद दिविजरनु
मक्कळंददि पोरेव सवद
रक्कसांतक रणदोळगे नि
दुःखसुखमय काय्द पाथन सूतनेदेनिसि ३१-०१

दोष गंध विदूर नाना
वेषधारि विचित्रकम म
नीषि मायारमण मध्वांतःकरणरूढ
शेषशायि शण्य कौस्तुभ
भूषणसुकंधर सदा सं
तौष बल सौंदयसारन महिमेगेनेंबे ३१-०२

साशनानशने अभी एं
बी श्रुतिप्रतिपाद्यनेनिसुव
केशवन रूपद्वयव चिद्देहदोळहोरगे
बेसरदे सद्भक्तियिंद उ
पासनेय गैयुत बुधरु हु
ताशननवोलिप्पनेदनवरत तुतिसुतिरु ३१-०३

सकल सद्गुण पूण जन्मा
द्य खिळ दोष विदूर प्रकटा
प्रकट सद्व्यापारि गत संसारि कंसारि
नकुल नानारूप नीया

मक नियम्य निरामय रवि
प्रकरसन्निभ प्रभु सदा मांपाहि परमाप्त ३१-०४

चेतनाचेतन जगत्तिनो
ळाततनु तानागि लकुमी
नाथ सवरोळिप्प तत्तद्रुपगळ धरिसि
जातिकारन तेरदि एल्लर
मातिनोळगिद्विखिळकमव
ता तिळिसिकोळळदले माडिमाडिसि नोडि नगुतिप्प ३१-०५

वीतभय विज्झन्यानदायक
भूतभव्यभवत्प्रभु खळा
राति खगवरवहन कमलाकांत निश्चिंत
मातरिश्वप्रिय पुरातन
पूतनाप्राणापहारि वि
धातृजनक विपश्चितर प्रिय सलहुसलहेम्म ३१-०६

दुष्टजनसंहारि सवोत
कृष्टमहिम समीरनुत सक
लैष्टदायक स्वरत सुखमय मम कुलस्वामि
हृष्ट पुष्ट कनिष्ठ सृष्ट्या
दृष्टकतृ करींद्रवरद य
थेष्टदनु उन्नत सुकमा नमीपेननवरत ३१-०७

पाकशासन पूज्यचरण पि
नाकिसन्नुतमहिम सीता
शोकनाशन सुलभ सुमुख सुवणवणनिभ
माकळत्र मनीषि मधुरिपु
ऐकमेवाद्वितियरूप प्र
तीक देवगणांतरात्मक पालिसुवुदेम्म ३१-०८

अप्रमेयोन्नत स्वरूप स
दा प्रसन्नमुखाब्ज मुक्तिसु
ख प्रदायक सुमनसाराधित पदांभोज
स्वप्रकाश स्वतंत्र सवग
इप्रफलदायक इतीश य
दु प्रवीर वितक्य विश्व सुतैजस प्राज्झन्य ३१-०९

गाळि नडेवंददलि नीलघ
नाळि वतिसुवंते ब्रह्म त्रि
शूलधर शक्राक मोदलादखिळ देवगण
काल कम गुणाभिमानि म
हालकुमियनुसरिसि नडेवळ
मूलकारण मुक्तिदायक हरियेनिसिकोंब ३१-१०

मोड कैबीसणिगेयिंदलि
ओडिसुवेनेंबन प्रयत्नवु
कूडुवुदे कल्पांतकादरु लकुमिवल्लभनु
जोडुकमव जीवरोळु ता
माडि माडिसि फलगळुणिसुव
प्रौढरादवरिवन भजिसि भवाब्धि दाटुवरु ३१-११

क्लेश मोहाज्झन्यान दोष वि
नाशक विरिचांडदोळगा
काशदोपादियलि तुंबिहनेल्ल कालदल्लि
घासिगोळिसदे तन्नवरना
यास विल्लदे सलहुवनु करु
णासमुद्र प्रसन्नवदनांभोज वैराज ३१-१२

कन्नडिय कैपिडिदु नोळपन
कण्णुगळु कंडल्लि एरगदे
तन्नवोल प्रतिबिंब कांबुवु दपणव बिट्टु

धन्यरिळेयोळ्गेळ्ळ कडेयलि
निन्न रूपव नोडि सुखिसुत
सन्नतिसुतानंदवारिधियोळ्गे मुळ्ळिगरु ३१-१३

अन्नमानि शशांकनोळ्ळ का
रुण्यसागर केशवनु पर
मान्नदोळ्ळ भारतियु नारायणनु भयदोळ्ळ
सोन्नगदिरनु माधवनु शइति
सन्नत श्रीलमी गृतदोळ्ळ
मान्य गोविंदाभिधनु इरुतिप्पनेंदेंदु ३१-१४

ईरमानि सरस्वति जग
त्सार विष्णुव चिंतिसुवुदु स
रोहुहासन मंडिगेयोळ्ळिरुतिप्प मधुवैरि
मारुतनु नवनीतदोळ्ळ सं
प्रेरक त्रिविक्रमनु दधियोळ्ळ
वारिनिधि चंद्रमरोळ्गे इरुतिप्प वामननु ३१-१५

गरुड सूपके मानि श्री श्री
धरनु देवते पत्रशाकके
वरनेनिप मित्राख्य सूय हृषीकपन मूति
उरगराजनु फल सुशाखके
वरनेनिसुवनु पद्मनाभन
स्मरिसि भुंजिसुतिहरु बल्लवरेळ्ळ कालदलि ३१-१६

गौरि सवांलस्थळेनिपळ्ळ
शौरि दामोदरन तिळ्ळिवुदु
गौरि पानांलस्थ संकरुषणन चिंतिपुदु
सारशकर गुडदोळ्गे वृ
त्रारि इरुतिह वासुदेवन
सूरिगळ्ळ धेनिपरु परमादरदि सवत्र ३१-१७

स्मरिसु वाचस्पतिय सौप
स्करदोळगे प्रद्युंननिप्पनु
निरयपति यमधम कटुद्रव्यदोळगनिरुद्ध
सरषप श्रीरामठेळदि
स्मरन श्रीपुरुषोत्तमन क
पूरदि चिंतिसि पूजिसुतलिरु परमभकुतियलि ३१-१८

नालिगिंदलि स्वीकरिप रस
पालु मोदलाददरोळगे घृत
तैलपक्कपदाथदोळगिह चंद्रनंदनन
पालिसुवधोअजन चिंतिसु
स्थूलकूष्मांड तिल माषज
ई ललितभअदोळु दअनु लमीनरसिह ३१-१९

मनवु माषसुभयदोळु चिं
तनेय माडच्युतन निरऋति
मनेयेनिप लवनदोळु मरेयदे श्रीजनादनन
नेनेवुतिरु फलरसगळोळु प्राणन
उपेंद्रन वीळयदेलेयोळु
द्युनदि हरिरूपवने कौंडादुतलि सुखिसुतिरु ३१-२०

वेदविनुतगे बुधनु सुस्वा
दौदकाधिपनेनिसिकोंबनु
श्रीदकृष्णन तिळिदु पूजिसुतिरु निरंतरदि
साधुकमव पुष्करनु सुनि
वेदित पदाथगळ शुद्धिय
गैदगैसुत हंसनामकगपिसुतलिप्प ३१-२१

रति सकल सुस्वादुरसगळ
पतियेनिसुवळु अल्लि विश्वनु

हुतवहन चूलिगळोळगे भागवन चिंतिपुदु
इतिज गोमयजादियोळु सं
स्थित वसंतन ऋषभदेवन
तुतिसुतिरु संतत सदा सद्भक्तिपूवकदि ३१-२२

पाक कतृगळोळगे चतुदश
लोकमाते महालकुमि गत
शोक विश्वंभरन तिळिवुदेळु कालदलि
चौकशुद्धसुमंडलदि भू
सूकराह्वय उपरिचैलप
ऐकदंत सनथकुमारन धेनिपुदु बुधरु ३१-२३

श्रीनिवासन भोग्यवस्तुव
काणगोडदंदलि विष्व
क्सेन परिखारूपनागिहनल्लि पुरुषाख्य
ताने पूजक पुज्यनेनिसि नि
जानुगर संतयिप गुरुपव
मानवंदित सवकालगळल्लि सवत्र ३१-२४

नूतन समीचीन सुरसौ
पैत हृद्यपदाथदोळु विधि
माते तत्तद्रसदोळु रसरूप तानागि
प्रीतिपडिसुत नित्यदि जग
न्नाथ विठलन कूडि ता नि
भितळागिहळेंदरितु नी भजिसि सुखिसुतिरु ३१-२५